पाठ 17

कृदन्त तुम् प्रत्यय, कर्मवाच्य, सप्ताह के दिन, समय और ऋतु वाचक शब्द, दिशाओं के नाम, पूरण संख्याएँ, कथा- 'दशमः त्वमसि'

17.1 क्रि. कृदन्त तुम् प्रत्यय: किसी कार्य के उद्देश्य को बताने के लिए धातु के साथ तुम् प्रत्यय जोड़ा जाता है। **सः धनम् अर्जितुं तत्र अगच्छत्** —वह धन कमाने के लिए वहाँ गया। वाक्य में अर्जितुम् शब्द अगच्छत् क्रिया का उद्देश्य बता रहा है। धातु के साथ तुम् जोड़ते समय निम्नलिखित नियम लागू होते हैं:-

i) अंतिम स्वर और मध्यवर्ती ह्रस्व स्वर को गुण हो जाता है,

ii) चुरादिगण की धातु के अङ्ग के अ का लोप हो जाता है,

iii) सेट् धातुओं में तुम् से पहले इ जुड़ता है। कृदन्त तुम् के कुछ उदाहरण देखिए:

कृ + तुम् = कर्तुम् (करना/करने के लिए)
गम्+ तुम् = गन्तुम् (जाना/जाने के लिए)
चुर्+ तुम् = चोरयितुम् (चुराना/चुराने के लिए)
जि + तुम् = जेतुम् (जीतना/जीतने के लिए)
दृश्+ तुम् = द्रष्टुम् (देखना/देखने के लिए)
पठ्+ तुम् = पठितुम् (पढ़ना/पढ़ने के लिए)
पा + तुम् = पातुम् (पीना/पीने के लिए)

17.2 अ. नीचे दिए वाक्यों को पढ़िए और उनका हिन्दी में अनुवाद कीजिए:

1. अहमिदं पुस्तकं पठितुम् इच्छामि। 2. ते बालकाः अधुना क्रीडितुं गमिष्यन्ति। 3. वयमधुना किमपि कर्तुं नेच्छामः। 4. वयं तर्तुं नदीं गच्छामः। 5. ते विद्याम् अर्जितुं विदेशमगच्छन्। 6. सर्वे जनाः जीवितुमिच्छन्ति। 7. यूयं श्वः इमं पाठं पठितुं स्वपुस्तकानि आनयत। 8. राजानं सेवितुं बहवः दासाः बह्व्यः दास्यश्च आसन्। 9. किं त्वमपि जलं पातुमिच्छसि? 10. आम्, अहं शीतलं जलं पातुमिच्छामि।

17.3 क्रि. कर्मवाच्य:- हिन्दी की तरह संस्कृत में भी सकर्मक क्रियाओं का प्रयोग कर्मवाच्य में होता है। कर्तृवाच्य को कर्मवाच्य में बदलने के नियम नीचे दिए हैं-

क) कर्मवाच्य में कर्तृवाच्य का कर्ता तृतीया विभक्ति में रहता है।

ख) कर्मवाच्य में कर्तृवाच्य का कर्म प्रथमा विभक्ति में रहता है और क्रिया की अन्विति इस नए कर्ता के साथ होती है।

ग) कर्मवाच्य में क्रिया का रूप मूल धातु से बनता है, अङ्ग से नहीं। धातु किस गण की है इसका कर्मवाच्य के निर्माण पर कोई प्रभाव नहीं होता। परन्तु चुरादिगण की धातुओं के स्वरों को होने वाले गुण और वृद्धि परिवर्तन बने

रहते हैं। इसप्रकार **पा** और **दृश्** धातुओं के कर्मवाच्य रूप **पा** और **दृश्** से ही बनते हैं, **पिब्** और **पश्य्** से नहीं। परन्तु **चुर्** धातु से कर्मवाच्य बनाते समय **चुर्** के स्वर को गुण होकर **चोर्** हो जाता है।

घ) कर्मवाच्य बनाने के लिए धातु के साथ आत्मनेपद के अन्त्य प्रत्ययों का प्रयोग होता है।

ङ) कर्मवाच्य बनाने के लिए धातु के साथ **य** जुड़ता है। **म्** या **व्** से आरम्भ होने वाले अन्त्य प्रत्ययों के बाद आने वाला **य-या** में बदल जाता है। यदि प्रत्ययों के आरम्भ में स्वर हो तो **य** के **अ** का लोप हो जाता है, जैसे **पठ् + य (य्) + अन्ते = पठयन्ते।**

च) **दा, गै, पा, स्था** आदि कुछ धातुओं के स्वर को **ई** हो जाता है- **दा-दीयते, गा-गीयते, पा-पीयते, स्था-स्थीयते** आदि।

छ) एकल व्यंजन के बाद यदि धातु के अंत में **ऋ** हो तो वह **रि** में बदल जाता है, **कृ - क्रियते, हृ - ह्रियते, मृ-म्रियते, भृ- भ्रियते।**

17.4 कुछ क्रियाओं के लट् लकार में कर्मवाच्य के प्रथम पुरुष, एकवचन के रूप नीचे दिए गए हैं:

कथ्	- कथ्यते	**दण्ड्**	- दण्डयते	**पठ्**	- पठयते
कृ	- क्रियते	**दा**	- दीयते	**पा**	- पीयते
गम्	- गम्यते	**दृश्**	- दृश्यते	**पूज्**	- पूज्यते
गै	- गीयते	**धृ**	- धार्यते	**प्रच्छ्**	- पृच्छयते
चुर्	- चोर्यते	**नी**	- नीयते	**लभ्**	- लभ्यते
त्यज्	- त्यज्यते	**पच्**	- पच्यते	**लिख्**	- लिख्यते

लट् लकार के अन्य रूप आत्मनेपद की क्रियाओं की तरह बनाए जा सकते हैं:

पठयते, पठयेते, पठयन्ते; पठयसे, पठयेथे, पठयध्वे;
पठये, पठयावहे, पठयामहे आदि।

टिप्पणी: कर्मवाच्य का प्रयोग प्रायः अन्य पुरुष के साथ होता है इसलिए आप कर्मवाच्य के प्रयोग का अभ्यास अन्य पुरुष में ही करें।

इसी तरह आत्मनेपद के प्रत्ययों का प्रयोग करके अन्य लकारों के रूप बनाए जा सकते हैं, जैसे:

अपच्यत	- पकाया गया	**अलिख्यन्त**	- लिखे गए
अपठयत	- पढ़ा गया	**अपठयन्त**	- पढ़े गए
क्रियताम्	- किया जाए	**अखाद्यन्त**	- खाए गए
दृश्यताम्	- देखा जाए	**अदण्डयन्त**	- दण्डित किए गए

17.5 अ. नीचे दिए वाक्यों को पढ़िए और हिन्दी में अनुवाद कीजिएः

1. वसन्ते ऋतौ सर्वत्र वाटिकासु मनोहराणि पुष्पाणि दृश्यन्ते। 2. इमानि पत्राणि केन अलिख्यन्त? 3. अद्य मम भगिन्या भोजनम् अपच्यत। 4. चौरैः तेषां गृहात् आभूषणानि अचोर्यन्त। 5. ते चौराः शासकैः अदण्डयन्त। 6. अस्माकं देशः तैः अग्रे नीयते इति जनैः कथ्यते। 7. एते श्लोकाः भक्तैः प्रातः गीयन्ते। 8. गुरुभिः शिष्येभ्यः शिक्षा दीयते। 9. उद्यमेन विना किमपि न लभ्यते। 10. स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।

17.6 सं. नीचे सप्ताह के दिनों के नाम संस्कृत में दिए गए हैंः

रविवारः, सोमवारः, मंगलवारः, बुधवारः, गुरुवारः/बृहस्पतिवारः, शुक्रवारः, शनिवारः।

17.7 नीचे कुछ सामान्य व्यवहार के समय-संबंधी शब्द देखिएः

कालः, समयः	– समय	रात्रिः (स्त्री.)	– रात
सायं कालः	– शाम	वादनकाले	– बजे
प्रातः कालः	– सुबह	मासः	– महीना
होरा (स्त्री.)	– घंटा	पक्षः	– पक्ष, पखवाड़ा
ह्यः	– कल (भूतकाल)	वर्षः, वर्षम्	– साल
श्वः	– कल (भविष्यतकाल)	वर्षाकालः	– वर्षा ऋतु, बरसात
परश्वः	– परसों (भविष्यतकाल)	ग्रीष्मः	– ग्रीष्म ऋतु
मध्याह्न	– दोपहर	वसन्तः	– वसन्त ऋतु
अपराह्णः	– दोपहर बाद	हेमन्तः, शिशिरः	– सर्दी ऋतु
मध्य रात्रिः	– आधी रात	शरद् (स्त्री.)	– पतझड़ मौसम

17.8 अ. निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिएः

क. 1. एकस्मिन् सप्ताहे सप्त दिनानि भवन्ति। 2. ह्यः रविवारः आसीत्। 3. अद्य सोमवारः अस्ति। 4. श्वः मङ्गलवारः भविष्यति। 5. परश्वः बुधवारः भविष्यति। 6. रविवारे विद्यालयेषु कार्यालयेषु च अवकाशः भवति। 7. जनाः रविवारे मनोरञ्जनाय गृहाद् बहिः गच्छन्ति। 8. ते विपणिं1 गत्वा विविधानि वस्तूनि अपि क्रीणन्ति2। 9. बालकाः बालिकाश्च वाटिकासु क्रीडन्ति। 10. बहवः जनाः स्वानि पूजास्थलानि गच्छन्ति।

(शब्दार्थः- 1. बाजार; 2. खरीदते हैं -क्री धातु से)

ख. 1. अद्य रात्रौ अस्माकं मित्रं राकेशः इटलीदेशात् भारतं प्रत्यागमिष्यति। 2. तस्य पत्नी अपि तेन सह आगमिष्यति। 3. राकेशः इटलीदेशे खनिजतैलस्य[1] उद्योगगृहे[2] अभियन्ता[3] अस्ति। 4. तस्य पत्नी तत्र एकस्मिन् विद्यालये हिन्दीभाषायाः अध्यापिका अस्ति। 5. तयोः स्वागतं कर्तुं वयं नववादनकाले विमानपत्तनं[4] गमिष्यामः। 6. अस्माकं गृहात् विमानपत्तनं दूरे अस्ति। 7. कारवाहनेन एका होरा गमिष्यति। 8. राकेशस्य

एयरइण्डियाविमानं दशवादनकाले आगमिष्यति। 9. राकेशः तस्य पत्नी च अस्माभिः सह दिनद्वयं[5] स्थास्यतः[6]। 10. गुरुवारे सायं सप्तवादनकाले तौ रेलयानेन मद्रासनगरं गमिष्यतः। 11. राकेशस्य पितरौ तत्र निवसतः। 12. तस्य पिता विश्वविद्यालये आंग्लभाषायाः[7] प्राध्यापकः आसीत्। 13. सः अधुना सेवानिवृत्तः[8] अस्ति। 14. स शेक्सपियरस्य साहित्यस्य विद्वान् अस्ति। 15. स शेक्सपियरस्य नाटकानां विषये भाषणं दातुम् आंग्लदेशम्[9] अपि अगच्छत्।

(**शब्दार्थः**— 1. खनिज तैलं- पेट्रोल; 2. उद्योग की कम्पनी में; 3. इंजीनियर; 4 हवाई अड्डा; 5. दो दिन; 6. रहेंगे; 7. अंग्रेजी भाषा का; 8. रिटायर्ड; 9. इंग्लैंड)

17.8 सर्व. हमने अस्मद्, युष्मद्, तद्, एतद्, इदम्, सर्व, किम्, और यद् सर्वनामों के रूप सीख चुके हैं। निम्नलिखित विशेषणों का प्रयोग जब दिशाओं के लिए होता है तब इनके रूप सर्वनामों की तरह चलते हैं।

पूर्व	(दिशा या पहला)	**अवर**	इस ओर
उत्तर	(दिशा या बाद का)	**अधर**	नीचे की ओर
दक्षिण	(दिशा या कुशल)	**अपर**	अन्य, दूसरा
पर	(अन्य बाद का)	**अन्य**	दूसरा

पूर्वस्यां दिशायाम् —पूर्व दिशा में, **उत्तरस्यां दिशायाम्** —उत्तर दिशा में।

17.10 अ. इन वाक्यों को पढ़िए और इनका हिन्दी में अनुवाद कीजिएः

1. भारतस्य उत्तरस्यां दिशायां नेपालः अस्ति। 2. दक्षिणस्यां दिशायां श्रीलङ्का वर्तते। 3. पूर्वस्यां दिशायां बाङ्ग्लादेशः, पश्चिमायां दिशायां च पाकिस्तानः, एतौ द्वौ देशौ स्तः। 4. भारतस्य उत्तरे हिमालयः शोभते[1]। 5. हिमस्य[2] आलयः[3] हिमालयः। 6. तस्मिन् पर्वते सदैव हिमं भवति, अतः सः हिमालयः कथ्यते। 7. वर्षाकाले भारते वृष्टिः[4] भवति। 8. तदा हिमालये हिमं पतति। 9. हिमपातस्य[5] दृश्यम् अतीव रम्यं भवति। 10. तद् द्रष्टुं[6] बहवः जनाः तत्र गच्छन्ति।

(**शब्दार्थः**— 1. शोभायमान है; 2. हिम- बर्फ; 3. घर; 4. बारिश, वर्षा; 5. हिमपात- बर्फ गिरना; 6. देखने के लिए)

17.11 वि. हमने चौदहवें पाठ में एक से दस तक संख्याएँ पढ़ी थीं। यहाँ हम उनसे सम्बन्धित क्रमवाचक पूरण संख्याएँ नीचे दे रहे हैंः

मूल संख्याएँ		**पूरण संख्याएँ**	**मूल संख्याएँ**		**पूरण संख्याएँ**
एक	-	प्रथम	षष्	-	षष्ठ
द्वि	-	द्वितीय	सप्तन्	-	सप्तम
त्रि	-	तृतीय	अष्टन्	-	अष्टम
चतुर्	-	चतुर्थ	नवन्	-	नवम
पञ्चन्	-	पञ्चम	दशन्	-	दशम

17.12 प. आइए, अब एक कहानी पढ़ेः

दशमः त्वमसि

एकदा एकस्य ग्रामस्य दश मित्राणि तीर्थयात्रायै अगच्छन्। मार्गे एका नदी आसीत्। ते नदीं तर्तुं[1] जले प्राविशन्। पारं गत्वा तेषां नेता तान् गणयितुम् आरभत[2]- एकः, द्वौ, त्रयः, चत्वारः, पञ्च, षट्, सप्त, अष्ट, नव इति। सः तेषु स्वं न अगणयत्। 'अत्र तु अस्माकं नव एव जनाः सन्ति। अवश्यम् अस्माकम् एको जनः नद्यां निमग्नः[3]।' इति सः तान् अकथयत्।

तदा तेषां कश्चिद् अन्यः गणयितुम् आरभत-त्वं प्रथमः, सः द्वितीयः, सः तृतीयः चतुर्थः, पञ्चमः, षष्ठः, सप्तमः, अष्टमः, नवमः इति। सोऽपि तेषु स्वं नागणयत्। अस्मासु एको जनः मृतः[4], इति चिन्तयित्वा ते सर्वे रोदितुम्[5] आरभन्त।

(शब्दार्थः- 1. पार करने के लिए; 2. शुरू किया; 3. डूब गया है; 4. मर गया; 5. रोना)

तदा एव कोऽपि पथिकः तेन मार्गेण गच्छति स्म। तान् शोकग्रस्तान्[1] जनान् दृष्टवा सः तेषां शोकस्य कारणमपृच्छत्। तेषां नेता अवदत्- वयं स्वग्रामात् दश मित्राणि तीर्थयात्रायै आगच्छन्। मार्गे इमां नदीम् उदतराम[2]। किन्तु अधुना वयं नव एव स्मः। अस्माकमेकः नद्यां निमग्नः। एतदस्माकं शोकस्य कारणम्।

नेतुः कथनं श्रुत्वा सः पथिकः तान् जनान् गणयितुम् आरभत- एकः, द्वौ, त्रयः, चत्वारः, पञ्च, षट्, सप्त, अष्टौ, नव, इति। ततः सः नेतारम् अकथयत्- न कोऽपि जनो युष्मासु न्यूनः[3]। दशमः त्वमसि।

(**शब्दार्थः**—1. दुःखी ; 2. पार किया; उत्+ तृ- तैरना, उत्+ अतराम; 3. कम)

17.13 अ. नीचे दिए वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिएः

1. मैं उस नेता की सभा में नहीं गया। 2. यह चित्र मेरी माता जी का नहीं है किन्तु उनकी बहिन का है। 3. ये सब पुस्तकें तुम्हारे द्वारा अपने घर से लाई गई हैं। 4. तुम्हारे मित्र यहाँ दिखाई नहीं दे रहे। 5. हम तुम्हारे दफ्तर में दोपहर बाद (अपराह्न) आएँगे। 6. मुझे सर्दी का मौसम (हेमन्त ऋतु; अच्छा लगता है (रुच्) 7. मेरे घर की उत्तर (दिशा) में एक बड़ा बाग है। 8. अज्ञान दुःख का मुख्य कारण है।

अभ्यासों के उत्तर

17.2 मैं यह पुस्तक पढ़ना चाहता हूँ। 2. वे लड़के अब खेलने जाएँगे। 3. हम अब कुछ भी करना नहीं चाहते। 4. हम तैरने के लिए नदी पर जा रहे हैं। 5. वे ज्ञान प्राप्त करने के लिए विदेश गए। 6. सब लोग जीना चाहते हैं। 7. कल आप सब इस पाठ को पढ़ने के लिए अपनी पुस्तकें लाएँ। 8. राजा की सेवा के लिए बहुत-से दास और बहुत-सी दासियाँ थीं। 9. क्या तुम भी पानी पीना चाहते हो? 10. हाँ, मैं ठंडा पानी पीना चाहता हूँ।

17.5 1. बसन्त ऋतु में बागों में चारों ओर सुन्दर फूल दिखाई देते हैं। 2. ये पत्र किसके द्वारा लिखे गए हैं? 3. आज मेरी बहिन के द्वारा खाना बनाया गया। 4. चोरों के द्वारा

उनके घर से गहने चुराए गए। 5. शासकों के द्वारा उन चोरों को दण्ड दिया गया। 6. हमारा देश उनके द्वारा आगे ले जाया जा रहा है, ऐसा लोगों के द्वारा कहा जाता है। 7. ये श्लोक भक्तों के द्वारा प्रातः गाए जाते हैं। 8. गुरुओं के द्वारा शिष्यों को शिक्षा दी जाती है। 9. परिश्रम के बिना कुछ भी प्राप्त नहीं होता। 10. अपने देश में राजा की पूजा होती है, विद्वान की सभी जगह पूजा की जाती है।

17.8 1. एक सप्ताह में सात दिन होते हैं। 2. कल इतवार (रविवार) था। 3. आज सोमवार है। 4. कल मंगलवार होगा। 5. परसों बुधवार होगा। 6. रविवार को विद्यालयों और कार्यालयों में छुट्टी होती है। 7. रविवार के दिन लोग मनोरंजन के लिए घर से बाहर जाते हैं। 8. वे बाजार जाकर कई तरह की चीजें भी खरीदते हैं। 9. लड़के और लड़किया; बागों में खेलते हैं। 10. बहुत-से लोग अपने-अपने पूजा स्थलों को जाते हैं।

17.10 1. भारत की उत्तर दिशा में नेपाल है। दक्षिण दिशा में श्रीलंका है। पूर्व दिशा में बांग्लादेश और पश्चिम दिशा में पाकिस्तान ये दो देश स्थित है। भारत के उत्तर में हिमालय शोभायमान है। हिम (बर्फ) का घर हिमालय है। उस पर्वत पर हमेशा बर्फ रहती है इसलिए उसे हिमालय कहते हैं। वर्षा ऋतु में भारत में वर्षा होती है। उस समय हिमालय पर बर्फ पड़ती है। हिमपात (बर्फ पड़ने) का दृश्य बहुत सुन्दर होता है। वहाँ बहुत लोग जाते हैं और हिमपात का दृश्य देखते हैं।

17.12 प. एक बार किसी गाँव के दस मित्र तीर्थ यात्रा पर गए। रास्ते में एक नदी पड़ी। वे नदी पार करने के लिए नदी में उतर गए। नदी के दूसरे किनारे पर जाकर उनके नेता ने उन्हें गिनना शुरु किया एक, दो, तीन, चार, पाँच, छह, सात, आठ, नौ। उसने उनमें अपने आपको नहीं गिना। उसने उनसे कहा, हम तो केवल नौ ही लोग हैं। निश्चय ही हम में से कोई एक नदी में डूब गया है।

इसके बाद उनमें से किसी दूसरे ने गिनना शुरू किया। तुम पहले हो, वह दूसरा है, वह तीसरा, चौथा, पाँचवाँ, छठा, सातवाँ, आठवाँ, नौवाँ है। उसने भी उनमें अपने आपको नहीं गिना। यह सोचकर कि हम में से एक मर गया है, वे सब रोने लगे।

उसी समय कोई यात्री उस रास्ते से गुजर रहा था। उन दुःखी लोगों को देखकर उसने उनके दुःख का कारण पूछा। उनके नेता ने कहा, "हम दस मित्र अपने गाँव से तीर्थ यात्रा के लिए निकले थे। रास्ते में हमने इस नदी को पार किया। परन्तु अब हम केवल नौ ही हैं। हममें से एक नदी में डूब गया है। हमारे दुःख का यही कारण है।

नेता के कथन को सुनकर यात्री ने उन्हें गिनना शुरु किया। एक, दो, तीन, चार, पाँच, छह, सात, आठ, नौ। तब उसने नेता से कहा तुममें से कोई भी गुम नहीं हुआ है। तुम दसवें हो।

17.13 अहं तस्य नेतुः सभायां नागच्छम्। 2. इदं चित्रं मम मातुः नास्ति, किन्तु तस्याः स्वसुः अस्ति। 3. त्वया (युष्माभिः) एतानि सर्वाणि पुस्तकानि स्वगृहात् आनीयन्ते। 4. युष्माकं मित्राणि अत्र न दृश्यन्ते। 5. वयं युष्माकं कार्यालयम् अपराह्णे आगमिष्यामः। 6. मह्यं हेमन्तः रोचते। 7. मम गृहस्य उत्तरस्यां दिशायां विशाला वाटिका वर्तते (अस्ति)। 8. अज्ञानं दुःखस्य प्रमुखं कारणम्।